संरक्षणवाद बनाम वैश्वीकरण

प्रलिम्सि के लयि:

वैश्वीकरण, संरक्षणवाद, आत्मनरि्भर भारत पहल

मेन्स के लयि:

वैश्वीकरण के पक्ष और वपिक्ष, वैश्वीकरण में गरिावट, भारत में संरक्षणवाद

चर्चा में क्यों?

हाल ही में वैश्वकि प्रौद्योगकिी शखिर सम्मेलन में भारत के वदिेश मंत्री (EAM) द्वारा ज़ोर देकर कहा गया है कि कोवडि -19 महामारी ने अनयिंत्रति वैश्वीकरण (Unchecked Globalization) के बजाय भारत की क्षमताओं और अधकि घरेलू उत्पादन की आवश्यकता को बढ़ाया है।

- उन्होंने आगे कहा कि तकनीकी वकिास को बढ़ावा देने के लयि, राष्ट्रों को आंतरकि रूप से अधकि स्टार्ट-अप, आपूर्त शिृंखला और रोज़गार सृजति करने की ज़रूरत है।
- वदिेश मंत्री के इस भाषण ने संरक्षणवाद बनाम वैश्वीकरण के बीच एक बहस छेड़ दी है।

प्रमुख बदिु

- **वैश्वीकरण:**
  - **परचिय:** वैश्वीकरण एक सीमारहति दुनयिा की परकिल्पना करता है या एक ग्लोबल वलिेज के रूप में दुनयिा की स्थापना का प्रयास करता है।
  - **आधुनकि वैश्वीकरण की उत्पत्ति:** वर्तमान वैश्वीकरण वर्ष 1991 में शीत युद्ध की समाप्ति और सोवयित संघ के वघिटन के साथ शुरू हुआ था।
  - **संचालति कारक:** वैश्वीकरण दो प्रणालयिों लोकतंत्र और पूंजीवाद, जो शीत युद्ध के अंत में अस्तित्व में आया।
  - **वैश्वीकरण के आयाम:** इसका श्रेय सीमाओं के पार माल, लोगों, पूंजी, सूचना और ऊर्जा के त्वरति प्रवाह को दयिा जा सकता है, जो अक्सर तकनीकी वकिास द्वारा सक्षम होता है।
  - **वैश्वीकरण का प्रकटीकरण:** टैरफि के बनिा व्यापार, आसान या बनिा वीज़ा के साथ अंतर्राष्ट्रीय यात्रा, कुछ बाधाओं के साथ पूंजी प्रवाह, सीमा पार पाइपलाइन और ऊर्जा ग्रडि और वास्तवकि समय में नरि्बाध वैश्वकि संचार ऐसे लक्ष्य प्रतीत होते हैं जनिकी ओर दुनयिा आगे बढ़ रही थी।
- **वैश्वीकरण के पक्ष में तर्क:**
  - **वस्तुओं और सेवाओं तक पहुँच:** वैश्वीकरण के परणिामस्वरूप व्यापार और जीवन स्तर में वृद्धि हुई है।
    - यह घरेलू उत्पाद, पूंजी और श्रम बाज़ारों के साथ-साथ वभिन्नि प्रकार की व्यापार एवं नविेश रणनीतयिाँ अपनाने वाले देशों के बीच प्रतस्पिर्द्धा को बढ़ाता है।
  - **सामाजकि न्याय का वाहक:** समर्थकों का मानना है कि वैश्वीकरण, मुक्त व्यापार का प्रतनिधित्वि करता है जो वैश्वकि आर्थकि वकिास को बढ़ावा देता है, रोज़गार का सृजन करता है, कंपनयिों को अधकि प्रतस्पिर्द्धी बनाता है और उपभोक्ताओं के लयि कीमतें कम करता है।
  - **सांस्कृतकि जागरूकता को बढ़ाता है:** सीमा-पार दूरयिों को कम करके, वैश्वीकरण ने अंतःपारीय-सांस्कृतकि समझ और साझाकरण को बढ़ाया है।
  - **प्रौद्योगकिी और मूल्यों को साझा करना:** यह वदिेशी पूंजी और प्रौद्योगकिी के माध्यम से गरीब देशों को आर्थकि रूप से वकिसति होने तथा समृद्ध होने का मौका भी प्रदान करता है।
- **वैश्वीकरण के वपिक्ष में तर्क:**

- **वैश्वकि समस्याओं का उदय:** वैश्वीकरण की आलोचना वैश्वकि असमानताओं को बढ़ाने, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के प्रसार और सीमा पार संगठति अपराध तथा बीमारी के तेज़ी से प्रसार के कारण की जाती है।
- **राष्ट्रवाद की प्रतक्रियिा:** वैश्वीकरण के आर्थकि पहलू के बावजूद, इसके परणिामस्वरूप राष्ट्रीय प्रतस्पिर्द्धा, राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि हुई है।
- **सांस्कृतकि एकरूपता की ओर बढ़ना:** वैश्वीकरण लोगों के व्यवहार अभसिरण को बढ़ावा मलिता है जसिसे अधकि सांस्कृतकि एकरूपता हो सकती है।
    - इससे बहुमूल्य सांस्कृतकि प्रथाओं और भाषाओं की वलिुप्तकिा खतरा है।
    - साथ ही, एक देश के दूसरे देश पर सांस्कृतकि आक्रमण के खतरे भी हैं।

नि-वैश्वीकरण या संरक्षणवाद

- **अर्थ:**
    - संरक्षणवाद सरकारी नीतयिों को संदर्भति करता है जो घरेलू उद्योगों की सहायता के लयि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रतबिंधति करता है।
    - टैरफि, आयात कोटा, उत्पाद मानक और सब्सडिी कुछ प्राथमकि नीतउिपकरण हैं जनिका उपयोग सरकार संरक्षणवादी नीतयिों को लागू करने में कर सकती है।

- **वैश्वकि क्षेत्र में संरक्षणवाद:**
    - वर्ष 2008-09 के वैश्वकि वत्तिीय संकट (GFC) के बाद से वैश्वीकरण में स्थरिता शुरू हो गई।
    - यह ब्रेक्जटि और अमेरकिा की 'अमेरकिा फर्स्ट पॉलसिी' में परलिक्षति होता है।
    - इसके अलावा व्यापार युद्ध तथा वशि्व व्यापार संगठन की वार्ता को बाधति करना वैश्वीकरण के पीछे हटने की एक और मान्यता है।
    - ये रुझान वैश्वीकरण वरिोधी या संरक्षणवाद की भावना का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जो कोवडि-19 महामारी के प्रसार के कारण और बढ़ सकता है।

- **भारत में संरक्षणवाद**
    - पछिले कुछ वर्षों में, कई देशों ने संरक्षणवादी बनने के लयि भारतीय अर्थव्यवस्था की आलोचना की है। इसे नम्निलखिति उदाहरणों में दर्शाया जा सकता है:
        - भारत सरकार द्वारा अमेरकिा के साथ एक लघु व्यापार समझौते के लयि शर्तों पर सहमत होने में वफिल रहने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था को आयात के लयि नहीं खोलना।
        - भारत 15 देशों की '**क्षेत्रीय व्यापक आर्थकि भागीदारी**' से बाहर हो गया था।
        - महामारी की शुरुआत के बाद, मई 2020 में शुरू की गई '**आत्मनरि्भर भारत पहल**' को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक संरक्षणवादी कदम के रूप में भी माना जाता था।

आगे की राह

- **डी-ब्यूरोक्रेटाइज़ेशन:** भारत को ऐसी नीतयिाँ बनाने की ज़रूरत है, जो अपनी प्रतस्पिर्द्धात्मकता में सुधार करें, कृषजिैसे कुछ क्षेत्रों को नौकरशाही से मुक्त करें और श्रम कानूनों को कम जटलि बनाएँ ।
    - कच्चे माल की खरीद से लेकर तैयार उत्पादों के आउटलेट तक एक समग्र और आसानी से सुलभ पारस्थितिकिी तंत्र उपलब्ध कराया जाना चाहयि।
- **जन-केंद्रति नीतयिाँ:** रोज़गार को गतप्रिदान करने का एकमात्र तरीका स्थानीय क्षेत्र में मूल्यवर्द्धन को बढ़ाना है। वकिास को गतदिेने के लयि ऐसी जन-केंद्रति और क्षेत्र-वशिष्टि नीतयिों के नरि्माण की आवश्यकता है।
- **वैकल्पकि वैश्वकि गठबंधन:** भारत को अब क्षेत्रीय गठबंधनों से आगे बढ़ने की ज़रूरत है और संयुक्त राज्य अमेरकिा, यूरोपीय संघ और जापान जैसे व्यापार के मामले में समान वचिारधारा वाले देशों के बीच सहयोगात्मक गठबंधन की कोशशि करनी चाहयि, ताकवैश्वकि आपूर्तशृंखला में चीन के आधपित्य का मुकाबला करने हेतु एक वकिल्प का तलाशा जा सके।
- **अनुसंधान एवं वकिास और क्षमता नरि्माण को बढ़ावा देना:** लागत-प्रतस्पिर्द्धी और गुणवत्ता प्रतस्पिर्द्धी बनने के लयि नरि्माण क्षमता तथा नीतढिाँचे को प्राथमकिता देने की आवश्यकता है।
- **उत्पादन में वृद्धकिरना:** घरेलू उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ नरि्यात बढ़ाने और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लयि और अधकि स्वायत्तता पर ज़ोर देना आवश्यक है। भारत को अब अगले 20 वर्ष के लयि योजना बनाने की ज़रूरत है।

स्रोत: द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/protectionism-vs-globalization